एक टापू के डूबने पर विवाद

जलवायु परिवर्तन के चलते समुद्र तल का ऊपर उठना कई द्वीप देशों के लिए अच्छी खबर नहीं है। ऐसा माना जा रहा है कि ऐसे कई द्वीप आने वाली सदियों में जलमग्न हो जाएंगे। ऐसा ही एक द्वीप है चैगोस। यहां के निवासियों को चार दशक पहले ब्रिटेन के अधिकारियों ने निष्कासित कर दिया था। ऐसा लगता है कि समुद्र तल में उभार की घटना इतनी विकट भी नहीं होगी कि ये बशिंदे अपने मूल निवास यानी चैगोस द्वीप पर न लौट सकें।

चैगोस द्वीप ब्रिटेन के कब्ज़े में रहा है। 1960 के दशक के अंत में चैगोस द्वीप के करीब 1000 बाशिंदों को हटाया गया था ताकि यू.एस. फौज के लिए जगह बनाई जा सके। चैगोस-वासियों ने ब्रिटिश अदालतों में कई बार अपील की कि उन्हें अपने द्वीप पर लौटने दिया जाए मगर ब्रिटिश सरकार लगातार इसका विरोध करती रही है। ब्रिटिश सरकार की दलील है कि जलवायु परिवर्तन के चलते यह मूंगा द्वीप कुछ ही दशकों में रहने योग्य नहीं रह जाएगा।

2003 में वारविक विश्वविद्यालय के जीव वैज्ञानिक चार्ल्स शेपर्ड ने द्वीपों के प्रबंधन की एक योजना बनाई थी। इसमें कहा गया था कि 1998 में समुद्र तल मापी लगाए जाने के बाद से समुद्र तल में प्रति वर्ष 5.4 मि.मी. की वृद्धि हुई है, जो वैश्विक औसत से दुगनी है। हाल में उन्होंने बताया कि वृद्धि दर बढ़ रही है और फिलहाल 12 मि.मी. प्रति वर्ष है।

दूसरी ओर, लिवरपूल के राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान केंद्र के फिलिप वुडवर्थ का मत है कि यह आंकड़ा निश्चित रूप से गलत है। उनका मत है कि साल-दर-साल उतार-चढ़ाव के चलते वास्तविक वृद्धि को लेकर स्पष्टता नहीं है। मगर सारे तथ्यों को ध्यान में रखते हुए उनका अनुमान है कि 1988 से लेकर अब तक समुद्र तल में सालाना वृद्धि मात्र 2.2 मि.मी. रही है।

चैगोस के मूल निवासी फिलहाल मॉरिशस, सेशेल्स और यू.के. में रह रहे हैं। ब्रिटिश सरकार उपरोक्त आंकड़े दिखाकर उन्हें वापिस लौटने की इज़ाजत नहीं दे रही है। खास तौर से अधिकारी इन आंकड़ों के आधार पर भावी परिदृश्य की गणना करके अपनी बात को प्रमाणित करते रहे हैं। वुडवर्थ का मत है कि इस समय समुद्र तल में वृद्धि दर जो भी हो, उसी दर को आगे बढ़ाकर भविष्य के बारे में निर्णय करना ठीक नहीं है। तो चैगोस के बाशिंदो के लिए घर वापसी का रास्ता खुलता दिख रहा है। ***(स्रोत फीचर्स)***